

Hindi B – Standard level – Paper 1
Hindi B – Niveau moyen – Épreuve 1
Hindi B – Nivel medio – Prueba 1

Wednesday 4 May 2016 (afternoon)

Mercredi 4 mai 2016 (après-midi)

Miércoles 4 de mayo de 2016 (tarde)

1 h 30 m

Text booklet – Instructions to candidates

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for paper 1.
- Answer the questions in the question and answer booklet provided.

Livret de textes – Instructions destinées aux candidats

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

Cuaderno de textos – Instrucciones para los alumnos

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश क

स्वच्छ भारत अभियान

1. स्वच्छता

- भोजन को स्पर्श करने से पहले भोजन और पकाते हुए भी अपने हाथ साबुन से धोएं
- शौचालय से आने के बाद अपने हाथ साबुन से अच्छी तरह धोएं
- खाना बनाने में इस्तेमाल होने वाली सभी सतहों व उपकरणों को धोएं और जीवाणु मुक्त करें
- रसोई व खाद्य पदार्थों को कीड़ों, चूहों आदि प्राणियों से बचाएं।



2. पके हुए भोजन और कच्चे पदार्थों को अलग-अलग रखें

- कच्चे मांस, मुर्गी (पोल्ट्री) व समुद्री खाद्य (सी फूड) को अन्य खाद्य पदार्थों से अलग रखें
- कच्चे खाद्य पदार्थों को काटने के लिए अलग उपकरण व बर्तन इस्तेमाल करें।



3. अच्छी तरह पकाएं

- भोजन को अच्छी तरह पकाएं। विशेषकर मांस, मुर्गी (पोल्ट्री) व समुद्री खाद्य को
- सूप और स्ट्यू जैसे व्यंजनों को पकाते समय यह सुनिश्चित कर लें कि वह 70 डिग्री सेल्सियस के तापमान तक अवश्य पहुंचे। मांस, मुर्गी (पोल्ट्री) पकाते समय यह सुनिश्चित करें कि उनका रस साफ़ हो, उसमें गुलाबीपन न हो।



4. भोजन सुरक्षित तापमान पर पकाएं

- पकाए गए भोजन को दो घंटों से ज़्यादा समय तक सामान्य तापमान पर न छोड़ें
- पहले से पके भोजन को दोबारा परोसते समय 60 डिग्री सेल्सियस से ज़्यादा तापमान पर गर्म करें।



5. सुरक्षित पानी इस्तेमाल करें

- पानी स्वच्छ कर के सुरक्षित बनाएं
- सुरक्षित ढंग से संसाधित (प्रोसेस) किए गए खाद्य पदार्थों का उपयोग करें, जैसे पैश्चराइज्ड दूध
- समाप्ति तिथि के बाद खाद्य पदार्थों का इस्तेमाल न करें।



भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण, fssai.gov.in (2015)

पाठांश ख

पत्र

प्यारी बेटी अदिति,

तुम्हारे ससुराल जाने का समय जैसे-जैसे समीप आ रहा है मेरी घबराहट बढ़ती ही जा रही है। जैसे ही मेरी कल्पना में तुम्हारी विदाई का क्षण आता है, मैं अपने 5 ही मन से भागने लगती हूँ और काम की व्यस्तता का बहाना ढूँढ़ने लगती हूँ। तुम कम बोलती हो, लेकिन घर के लिए तुम्हारा अस्तित्व अद्भुत कोलाहल भर देता है। तुम्हारी गतिविधियाँ, कुछ नया करने की हमेशा कोशिश, यहाँ तक कि देर तक तुम्हारा सोना भी पूरे घर को गति 10 देता है। हम तुम्हारे बिना रहने की आदत कैसे डालेंगे और पापा के मुँह से तो सारा दिन तुम्हारा ही नाम निकलता है। कल ही पापा कह रहे थे कि बात बात पर बिगड़ने वाली लड़की आज हमें कितने व्यवहारिक तर्क देकर समझाती है। छोटी बहन, भाई का ध्यान हो या 15 घर की अर्थव्यवस्था की चिंता, तुम्हारी समझ मुझे बल देती है। मैं आश्वस्त हूँ कि तुम अपना वैवाहिक जीवन अच्छी समझ और सामंजस्य से सफल बना सकोगी।



मुझे पूरा विश्वास है, तुम ससुराल में सबको प्यार बाँट कर सभी की चहेती बन जाओगी। माला के मनकों की तरह सारे रिश्ते तुम्हें एक डोर में बांधने हैं। यही सच्चा सुख है और इसी में हम 20 सब की खुशी है। हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है, ईश्वर से कामना करते हैं, तुम्हारा नवजीवन खुशियों से भरा हो, पर बेटा तुम बहुत याद आओगी।

तुम्हारी मम्मी

अर्चना मंडलोई, अहा ज़िंदगी, मार्च (2015)

Blank page
Page vierge
Página en blanco

पाठांश ग

पहाड़ों की खुदाई

विकास के नाम पर देश में पहाड़ों की खुदाई उस स्तर पर पहुंच गई है, जहां दिल्ली के पास अरावली पहाड़ियों के अब केवल अवशेष नज़र आते हैं। बुंदेलखंड में ग्रेनाइट पत्थर के लालच में पहाड़ियों को डायनामाइट से उड़ाने का सिलसिला निरंतर चल रहा है। इस कारण अलवर ज़िले के इलाके में ट्रक और ट्रैक्टरों के घुसने पर पाबन्दी लगा दी है। बिना अध्ययन के गायब 5 कर दिए गए पहाड़ तापमान में वृद्धि कर सकते हैं। पर्यावरण में आया असंतुलन खेती के लिए खतरा हो सकता है। अलवर से 600 कि.मी दक्षिण-पूर्व यानी उत्तर प्रदेश के महोबा ज़िले में कबरई पत्थरों की बड़ी मंडी है। ग्रेनाइट पत्थरों से लदे दर्जनों ट्रैक्टर इस मांग की आपूर्ति के लिए पहाड़ में काटी गई सर्पिलाकार ढलानों पर आ-जा रहे हैं।

पर्यावरण समिति के अध्यक्ष कहते हैं कि पहाड़ में खनन की अनुमति हासिल करने के पहले 10 तीन साल गर्मी, सर्दी और बारिश में उस पहाड़ के आसपास की हवा, जमीन और पानी के बारे में संपूर्ण अध्ययन किया जाता है जिसके आधार पर ही अनुमति दी जाती है। उनका मानना है कि किसी भी कारक को पहाड़ हटाने से नुकसान न होने पर ही अनुमति दी जाती है। महोबा में भूजल स्तर बेहद नीचे चला गया है। यहां के कई इलाके “डार्क ज़ोन” घोषित किए जा चुके हैं। बुंदेलखंड और झारखंड में पहाड़ों को काटने के लिए डायनामाइट लगाकर ब्लास्ट किया 15 जाता है। बटन दबाते ही उसका बड़ा हिस्सा धमाके से उड़ जाता है। छोटे-बड़े पत्थर हवा में उछल जाते हैं। कभी-कभी तो यह उछलकर किसी आंगन में गिर जाते हैं। इलाके के मकान गुबार से भर जाते हैं और इनमें जो दरारें पड़ती हैं, सो अलग। झारखंड में पत्थर के लालच में करीब 80 पहाड़ नष्ट होने के आंकड़े सामने आए हैं। यहां की तबाही पर टिप्पणी करते हुए डायरेक्टर कहते हैं, “पहाड़ और जमीन के भीतर गहराई तक पत्थर निकालने के लिए किए जाने 20 वाले धमाके बहुत-सी ऊर्जा, धरती के भीतर छोड़ते हैं। इससे इलाके की इमारतों के लिए स्थायी खतरा पैदा होता है।”

पहाड़ों के साथ हो रहा अतिक्रमण भौतिक समस्याओं के साथ सांस्कृतिक ताने-बाने को भी तार-तार कर रहा है। आदिवासी प्रकृति के बड़े संरक्षक होते हैं और पहाड़ को भगवान मान 25 इसकी पूजा करते हैं। राजमहल की पर्वत श्रंखला में जानवरों के जीवाश्म खूब मिलते हैं। लेकिन 2012 में इसका अमरजोला पहाड़ पूरी तरह खत्म हो गया और कैलादेवी मंदिर के पास की पहाड़ी से पक्षी पलायन कर चुके हैं। महोबा में जल स्तर गिर गया और झारखंड में दुर्लभ जीवाश्म लुप्त हो गए हैं। आखिर यह कहां का न्याय है कि शहर की नींव खड़ी करने के लिए पहाड़ों को न्योछावर कर दिया जाए।



पीयूष बबेले, इंडिया टुडे 13 मई, (2015)

Turn over / Tournez la page / Véase al dorso

पाठांश घ

नए अवतार में किताबें

जब से टीवी चैनल्स की संख्या में विस्तार हुआ है, लोगों के पढ़ने की आदत में कमी आई है, पर जगतजाल (इंटरनेट) पर जब ब्लॉग्स की बहार आई, तो हिंदी लिखने-पढ़ने वाले लोगों ने इसे हाथों-हाथ लिया। सच कहूँ तो मैंने आज तक ई-पुस्तक पढ़ने के बारे में नहीं सोचा। काम के दौरान लगभग 7 घंटे मैं कंप्यूटर पर बिताती हूँ और उसके बाद स्क्रीन की ओर देखना मेरे बस की बात नहीं होती। काम के समय हिंदी न्यूज़ साइट पर समाचार जरूर पढ़ती हूँ। वो किताबें जो आप हिंदी में पढ़ना चाहते हैं बतौर ई-बुक उपलब्ध हैं भी या नहीं ये जानना अपने आप में जटिल परिश्रम है। हमारे देश में तकनीकी ज्ञान के लिए शहर के विद्यार्थी अब ई-बुक का सहारा लेने लगे हैं, लेकिन भारत में बिजली, कंप्यूटर आदि की अनेक असुविधाओं के कारण इसका अभी हर जगह संभव होना थोड़ा मुश्किल लगता है। सफ़र करते समय मैं ई-पुस्तकें ही पढ़ती हूँ क्योंकि इसकी सर्वव्यापी उपलब्धि सबसे बड़ी विशेषता है।

[- X -]

हिंदी समाज में ई-बुक अभी उतनी लोकप्रिय नहीं हुई है। प्रकाशकों ने कुछ साइट्स से अनुबंध किया है, जो ई-बुक के क्षेत्र में काम कर रहीं हैं। लेकिन सभी जगह संक्षिप्त रचनाएं पढ़ने की प्रवृत्ति अधिक दिखती है। पूरी पुस्तक या बड़ा आलेख पढ़ने वालों की संख्या अभी बहुत कम है।

15 [- 39 -]

भले ही मैं पढ़ने के पारंपरिक तरीके का प्रशंसक हूँ, पर ई-रीडिंग का विरोधी भी नहीं हूँ। मेरा मानना है कि भविष्य ई-रीडिंग का ही है। यह मैं अखबारों के ऑनलाइन संस्करण और न्यूज़ पोर्टल्स की बढ़ती संख्या और लोकप्रियता को देखते हुए कह रहा हूँ। यूनिकोड के चलते अब क्षेत्रीय भाषाओं के अवतरण ऑनलाइन पोस्ट करना आसान हो गया है। आप अपने कंप्यूटर, मोबाइल फोन या किंडल में ढेर सारी किताबें संचित करके रख सकते हैं।

[- 40 -]

यदि आप ई-पुस्तकें को अपना रहे हैं, तो इसका मतलब है, पर्यावरण संरक्षण में भी सहयोग दे रहे हैं। क्योंकि सौ पन्ना बनाने में बांस का एक पूरा पेड़ लग जाता है। ई-पुस्तकें के इस्तेमाल से किताबें छपने के दौरान जो पर्यावरणीय क्षति हो रही थी वह नहीं होगी। ई-रीडिंग पढ़ने का सस्ता माध्यम है और यह पर्यावरण के अनुकूल भी है।

[- 41 -]

ई-बुक में सबसे अच्छी बात मुझे ये लगती है कि इसमें पठन के साथ ध्वनि का भी मेल है। इससे जिन चीजों को पढ़ने में समय अधिक लगता था उन्हें सुनने में समय कम लगता है। हमारी वैदिक संस्कृति में समूचा साहित्य ही श्रुति पर आधारित था।

30

[- 42 -]

किताब एक स्मृति भी बनती है, एक साथी भी। उसे कहीं भी पढ़ने की सुविधा अब भी किंडल या आईपैड से बेहतर है। हिंदी साहित्य ही नहीं अपितु विश्व साहित्य के क्षेत्र में भी किताबों की दुकाने अब भी खूब चलती हैं। पुस्तक मेले अब भी लगते हैं। अच्छा साहित्य हम हमेशा साथ लेकर रखना चाहते हैं। छपी किताबों की बात कुछ और है।



35

अहा ज़िंदगी, फरवरी (2015)